Be Adabi Ki Saza (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 474
Weekly Booklet : 474

MAKTABATUL MADINA INDIA

अमीरे अहले सुन्नत का 1989 (तकरीबन 38 साल पहले) का बयान

# बे अदबी की सज़ा

(सफ़हात : 16)


गुस्ताख़े औलिया पागल हो गया 05
माल के सबब मरते वक़्त 2 आफ़तें 09
औलिया व उ़लमा से इम्तिहानन सुवाल करना कैसा ? 06
फ़रमाने ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه 14



शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

# बे अदबी की सज़ा[1]

**दुआए अत्तार :** या रब्बे करीम ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला "बे अदबी की सज़ा" पढ़ या सुन ले उस को और उस की आने वाली नस्लों को औलियाए किराम की बे अदबी और बे अदबों के शर से महफ़ूज़ फ़रमा, उस को मां बाप और ख़ानदान समेत बे हिसाब बख़्श दे। اٰمِيْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ज़िक्रे इलाही की कसरत करना और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना फ़क्र (यानी तंगदस्ती) को दूर करता है।

(القول البدیع، ص273)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

## बे अदबी की सज़ा

हज़रते अबू सईद अब्दुल्लाह मुहम्मद तमीमी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने 580 हिजरी में दिमश्क़ की जामेअ़ मस्जिद में अपना वाक़िआ बयान फ़रमाया : मेरा एक क्लास फ़ेलो था जिस का नाम "इब्ने सक़ा" था, हम दोनों की दोस्ती थी और हम मिल जुल कर सबक़ याद किया करते थे, हम ने बग़दाद शरीफ़ में एक बुज़ुर्ग

---

1...येह बयान शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने 1410 हिजरी बमुताबिक़ 16 नवम्बर 1989 ई़ को आशिक़ाने रसूल के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में फ़रमाया था। जिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के "शोबा बयानाते अमीरे अहले सुन्नत" ने मुरत्तब किया है।

का शोहरा सुना जो अपने वक़्त के ग़ौस माने जाते थे, उन की मश्हूर करामत येह थी कि वोह जब चाहते ज़ाहिर हो जाते और अचानक बैठे बैठे नज़रों से ओझल (यानी ग़ाइब) भी हो जाते थे। हम ने मिल कर उन से मुलाक़ात का इरादा किया, उस वक़्त शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी हमारे क्लास फ़ेलो थे, उन्हों ने कहा : मैं भी साथ चलता हूं। इब्ने सक़ा ने कहा : येह बहुत बड़े ग़ौस माने जाते हैं मगर मैं उन से ऐसा मुश्किल सुवाल पूछूंगा कि वोह जवाब ही नहीं दे सकेंगे। मैं (यानी अबू सईद अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद) ने कहा : मैं भी बहुत मुश्किल सुवाल पूछूंगा देखता हूं क्या जवाब देते हैं मगर शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने हम दोनों से मुख़्तलिफ़ बात कही, उन्हों ने फ़रमाया : मैं कोई सुवाल नहीं करूंगा कि बुज़ुर्गों के सामने लब कुशाई नहीं की जाती बल्कि सिर्फ़ उन की ज़ियारत करूंगा, हम तीनों अपनी अपनी निय्यत ले कर उन के दौलत कदे (यानी घर) पर ह़ाज़िर हो गए, वोह अपनी मस्नद (SEAT) पर मौजूद नहीं थे, हम वहां बैठ गए, अचानक हम ने देखा कि वोह अपनी मस्नद पर मुतमक्किन हुए और ग़ज़ब आलूद निगाहों से उन्हों ने इब्ने सक़ा को घूरा और फ़रमाया : तू ऐसा सुवाल पूछना चाहता है जिस का जवाब हम से नहीं बन पड़ेगा, सुन ! तेरा सुवाल येह है और उस का जवाब येह। चूंकि वोह रौशन ज़मीर थे, इब्ने सक़ा सुवाल पूछे उस से पहले उन्हों ने उस का सुवाल भी बता दिया और जवाब भी इरशाद फ़रमाया और फ़रमाया : ऐ इब्ने सक़ा ! मैं तेरे अन्दर कुफ़्र की आग भड़कती देख रहा हूं फिर उन्हों ने मुझ पर भी जलाल वाली निगाह डाली और फ़रमाया : तू येह देखना चाहता था कि मैं तेरे सुवाल का क्या जवाब देता हूं तो सुन ! तेरा सुवाल येह है और उस का जवाब येह, (मगर तेरी गुस्ताख़ी इब्ने सक़ा की त़रह़ नहीं कि इब्ने सक़ा ने तो बद गुमानी की थी कि जवाब दे ही नहीं सकता, लेकिन बे अदबी तू ने भी की और तेरी इस

बे अदबी की वजह से) मैं तेरे कानों की लौ तक दुनिया देख रहा हूं कि तू दुनिया में कानों की लौ तक डूबा हुवा है। हम दोनों को ग़ज़ब भरी निगाहों से देखने और जवाबात देने के बाद वोह अपनी मस्नद से खड़े हो गए और शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُ اللهِ عَلَیۡه को सीने से लगा लिया और बड़े प्यार से शफ़्क़त से फ़रमाया : बेटे ! मैं देख रहा हूं कि तू बग़दादे मुअ़ल्ला में औलियाए किराम के इज्तिमाअ़ में येह एलान कर रहा है : "قَدَمِیۡ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ کُلِّ وَلِیِّ اللّٰه" यानी मेरा येह क़दम हर वलियुल्लाह की गर्दन पर है।

ह़ज़रते अबू सईद अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद तमीमी शाफ़ेई رَحۡمَۃُ اللهِ عَلَیۡه फ़रमाते हैं : उन बुज़ुर्ग ने जो कुछ इरशाद फ़रमाया बिऐ़निही वैसा ही हुवा। हुज़ूर ग़ौसुस्समदानी, क़ुत़्बे रब्बानी, मह़बूबे ह़क़्क़ानी, पीरे लासानी, क़िन्दीले नूरानी, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُ اللهِ عَلَیۡه की शान वाक़ेई बहुत बड़ी हुई और येह वक़्त भी देखा गया कि आप ने बर सरे मिम्बर (यानी मिम्बर पर) येह एलान किया कि मेरा येह क़दम औलियाउल्लाह की गर्दनों पर है और सब वलियों ने अपनी गर्दनें झुका दीं और उन का क़दम बढ़ बढ़ कर अपनी गर्दन पर रखा।

जैसा कि मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُ اللهِ عَلَیۡه फ़रमाते हैं :

सरों पर जिसे लेते हैं ताज वाले तुम्हारा क़दम है वोह या ग़ौसे आज़म

(ज़ौक़े नात, स. 183)

इब्ने सक़ा ने ख़ूब इ़ल्मे दीन ह़ासिल किया और बहुत बड़ा अ़ल्लामा, शैख़ुल ह़दीस, शैख़ुल क़ुरआन, मुफ़्ती और इतना ज़बरदस्त मुनाज़िरे इस्लाम बन गया कि कोई ईसाई और यहूदी उस का मुक़ाबला नहीं कर सकता था, वोह इस्लाम के मुतअ़ल्लिक़ इतने दलाइल देता था कि सामने वाला हार जाता और घुटने टेक देता, यूं वोह सब को मात दे देता (यानी हरा देता) था, यहां तक कि उस का शोहरा

दूसरे मुमालिक में भी पहुंच गया, वोह ख़लीफ़ए वक़्त का बहुत मुक़र्रब बन गया, फिर ख़लीफ़ा ने उसे मुल्के रूम की त़रफ़ भेजा, जब वोह मुल्के रूम पहुंचा और वहां बादशाह का मेहमान हुवा तो उस ने वहां के ईसाई पादरियों से भी मुनाज़रा किया और सब को हरा दिया।

एक दिन इब्ने सक़ा की नज़र रूम के बादशाह की लड़की पर पड़ गई, वोह उसे दिल दे बैठा और उस पर आ़शिक़ हो गया, फिर रात दिन वोह उस लड़की के इ़श्क़ में घुलने लगा, आख़िरेकार उस ने बादशाह से मुद्दआ बयान किया और शहज़ादी का हाथ मांगा तो बादशाह ने कहा : येह कैसे हो सकता है कि तुम मुसलमान हो और वोह भी मुसलमानों के बहुत बड़े अ़ल्लामा जब कि हम ईसाई हैं, हम तुम्हें अपनी लड़की नहीं दे सकते लिहाज़ा इस ख़याल को अपने दिल से निकाल दे, उस ने कहा : मैं उस लड़की के बग़ैर ज़िन्दा नहीं रह सकता, चाहे मुझे कैसी ही क़ुरबानी देनी पड़े, बादशाह ने कहा : अगर तू ईसाई मज़हब क़बूल कर लेता है तो मैं अपनी लड़की तेरे निकाह़ में दे देता हूं चुनान्चे वोह इ़श्क़ के हाथों मजबूर हो गया, मन्क़ूल है : शहवत बादशाहों को ग़ुलाम बना देती है।

(مکاشفۃ القلوب، ص255)

इब्ने सक़ा भी शहवत के आगे सरनिगूं (यानी औंधा) हो गया, उस लड़की के इ़श्क़ में गिरिफ़्तार हो कर अपना दीन व ईमान दाव पर लगा दिया और ईसाई मज़हब क़बूल कर के उस से निकाह़ कर लिया। कुछ अ़र्से उस ने ऐ़शो इ़शरत की ज़िन्दगी गुज़ारी, आख़िरेकार उस के जिस्म में एक बीमारी पैदा हो गई, जिस से उस का जिस्म सड़ने लगा, बहुत इ़लाज मुआ़लजा किया लेकिन ठीक नहीं हुवा यहां तक कि वोह बिल्कुल नरवस (Nervous) हो कर बिस्तर पर आ गया और किसी काम का न रहा, चुनान्चे सारा दरबार उस से मुतनफ़्फ़िर (यानी बेज़ार) हो गया,

उस के ज़ख़्मों से बदबू आने लगी, आख़िरेकार बादशाह ने उस को उठा कर वीराने में फ़िंकवा दिया। एक दिन एक मुसलमान का वहां से गुज़र हुवा जो उस को जानता था तो उस ने कहा : ऐ इब्ने सक़ा ! देख ! तेरी क्या ह़ालत हो गई ? लिहाज़ा अब तू तौबा कर के मुसलमान हो जा ! तो उस ने रोते हुए कहा : अब मुझ से कलिमा नहीं पढ़ा जाता, उस ग़ौस की बद दुआ के सबब मैं बर्बाद हो गया, काश ! मैं उस अल्लाह के वली की बे अदबी और गुस्ताख़ी न करता और मेरा ईमान ज़ाएअ़ न होता, उसी ह़ालत में वोह एड़ियां रगड़ रगड़ कर कुत्ते से बदतर मौत मर गया।

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** पता चला कि जो अल्लाह पाक के वलियों की बे अदबी और गुस्ताख़ी करता है बिल आख़िर तबाही उस का मुक़द्दर होती है, शुरूअ़ में या बर्सों तक पता नहीं चलता तो वोह समझता है कि मैं जो कर रहा हूं और जिस नज़रिये पर क़ाइम हूं वोह सब दुरुस्त है, ह़ालांकि ऐसा नहीं है। मैं (यानी अमीरे अहले सुन्नत) ने और भी ऐसे केसिज़ देखे हैं, इस दुनिया में ऐसे कई एक नौजवान जो बहुत ज़हीन तरीन थे लेकिन आख़िरेकार वोह (बे अदबी की वजह से) जवानी में ही सख़्त पागल हो गए।

जैसा कि एक नौजवान पागल हो गया, उस का छोटा भाई मेरे पास तावीज़ वग़ैरा के लिए आया तो उस ने बताया कि मेरे बड़े भाई ने मेरे सामने औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِم की कुछ गुस्ताख़ियां की थीं, तब से उसे पता नहीं क्या हुवा और येह ऐसा हो गया, ऐसे शख़्स का मैं क्या इलाज कर सकता था, बहरह़ाल उस नौजवान ने उसी बीमारी में दम तोड़ दिया।

याद रखिए ! औलियाए किराम की तौहीन के सबब दुनिया में भी रुस्वाई है और आख़िरत में भी ज़िल्लतो ख़्वारी है। अल्लाह पाक हमें वलियों की मह़ब्बत पर ज़िन्दा रखे और अल्लाह पाक इस से पहले हमें ईमान पर मौत दे दे कि हम वलियों की तौहीन करें, अल्लाह न करे, अल्लाह न करे।

## औलियाए किराम से दुश्मनी रखना

ह़दीसे क़ुदसी (उस ह़दीस को कहा जाता है कि ज़बाने ह़क़ तर्जुमान रह़मते आ़लमियान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हो मगर कलाम रब्बुल आ़लमीन का हो, उस) में है : जो मेरे वली से दुश्मनी करता है (और एक रिवायत में है तौहीन करता है) मैं उस के लिए एलाने जंग करता रहूं।

(بخاری، 4/248، حدیث:6502۔ معجم اوسط، 1/184، حدیث:609)

पता चला जो औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم की तौहीन का मुर्तकिब होता है अल्लाह पाक ख़ुद उस के लिए एलाने जंग फ़रमाता है और यक़ीनन अल्लाह पाक जब किसी के लिए एलाने जंग फ़रमा दे तो दुनिया की कोई त़ाक़त उस को न दुनिया में बचा सकती है न ही क़ब्रो ह़श्र में बचा सकती है। देखिए ! इब्ने सक़ा अल्लाह पाक के वली की गुस्ताख़ी कर के कुफ़्र की मौत से हमकिनार हुवा, उस का इ़ल्म, अ़मल, किरदार, लब कुशाई का अन्दाज़, बेहतरीन मुक़र्रिर, मुफ़स्सिर, ज़बरदस्त मुनाज़िर, बहुत बड़ा आ़लिम और परहेज़गार होना उस को न बचा सका और वोह ज़िल्लत के साथ मारा गया।

(वाक़िए के तीसरे फ़र्द) ह़ज़रते अबू सई़द अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद तमीमी शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ऐसा सुवाल नहीं करना था कि वोह जवाब ही न दे सकें, बल्कि मैं ने सिर्फ़ येह देखना था कि क्या जवाब देते हैं ?

येह भी एक त़रह़ से आ़लिम की बे अदबी है। याद रखिए ! अगर कोई आ़लिम हमारे मस्अले का जवाब न दे सके तो येह हरगिज़ नहीं कहा जाएगा कि हम ने उस का इम्तिह़ान लिया और वोह फ़ेल हो गया लिहाज़ा वोह आ़लिम नहीं है जैसे कोई ह़ाफ़िज़े क़ुरआन तरावीह़ में अगर दो चार आयतें भूल जाए तो उसे लुक़्मा देते हैं, इस पर कोई येह नहीं कहता कि येह ह़ाफ़िज़ नहीं है बल्कि इस का

येही मत़लब होता है कि वक़्ती त़ौर पर उस को याद नहीं। पता चला कि उ़लमाए किराम से इम्तिह़ानन मस्अला नहीं पूछना चाहिए बल्कि उन का अदब करना चाहिए, हां ! अगर ज़रूरतन पूछा तो अलग बात है या कोई बड़ा आ़लिम किसी आ़लिम से इम्तिह़ान ले जैसे पर्चे (Exam) लिया जाता है, उस से वोह मुराद नहीं, बिला ज़रूरत जो चेक करता है वोह नहीं करना चाहिए।

बहरह़ाल मैं ने भी एक त़रह़ से इम्तिह़ान लेना चाहा था, उन्हों ने मेरे लिए येह बददुआ़ की थी कि मैं दुनिया तेरे कानों की लौ तक देख रहा हूं, चुनान्चे मुझे सुल्त़ान नूरुद्दीन ज़ंगी शहीद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने मह़कमए औक़ाफ़ का वज़ीर बना दिया, पता चला कि वज़ीर बनना और मालो दौलत आ जाना कोई सआ़दत नहीं बल्कि बहुत बड़ी मुसीबत है। ह़ज़रते अबू सई़द رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ कहते हैं : नतीजतन हर त़रफ़ से दुनिया मुझ पर टूट पड़ी, बहुत सारा मालो दौलत मेरे गले पड़ गया और मैं बहुत बड़ा सर्मायादार बन गया, यूं उस बुज़ुर्ग ग़ौस رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का क़ौल पूरा हुवा, दुनिया मेरे कानों तक आ गई। (بہجۃ الاسرار، ص19 ملخصاً)

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** मैं आप को जो कहता हूं वोह क़ुरआनो ह़दीस की रू से ही कहता हूं, क़ुरआने पाक बिल्कुल वाज़ेह़ त़ौर पर हमें समझाता है जैसा कि सूरए तकासुर में अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُۙ(۱) حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَؕ(۲) كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَۙ(۳) ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَؕ(۴) كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْیَقِیْنِؕ(۵)

(پ30، التکاثر:1 تا 5)

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : ज़ियादा माल जमा करने की त़लब ने तुम्हें ग़ाफ़िल कर दिया। यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा। हां हां अब जल्द जान जाओगे। फिर यक़ीनन तुम जल्द जान जाओगे। यक़ीनन अगर तुम यक़ीनी इ़ल्म के साथ जानते (तो माल से मह़ब्बत न रखते)।

## नोट को चूमना कैसा ?

वाक़ेई ! आज अगर किसी को नोट दो तो वोह चूम कर आंखों से लगाता और ख़ुश होता है, मैं उस को हैरत से देखता हूं कि लाशुऊरी में शैतान के त़रीक़े पर अ़मल कर रहा है, दौलत की मह़ब्बत में मस्त रहने वालो कान खोल कर सुनो ! मन्क़ूल है : जब दिरहमो दीनार बने तो सब से पहले शैत़ान ने उन को उठा कर अपनी पेशानी पर रखा फिर उन को चूमा और बोला : जिस ने इन से मह़ब्बत की वोह मेरा ग़ुलाम है। (احیاء العلوم،3/288)

बद क़िस्मती से अब इस दुनिया में ग़ुलामाने इब्लीस की कमी नहीं, आज हर एक माल से मह़ब्बत करता है, मैं भी अपने दिल में माल की मह़ब्बत मह़सूस करता हूं, अल्लाह करे निकल जाए। आज लाखों में कोई इक्का दुक्का ही होंगे, ग़ारों में होंगे या मज़ारों में चले गए होंगे जो माल से मह़ब्बत नहीं करते वरना बाज़ारों में माल से बे नियाज़ नज़र नहीं आते, हां ! जिन्हें अल्लाह पाक बचाए मसलन औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم वग़ैरा कि अल्लाह पाक ने उन्हें माल से दूर ही रखा जैसा कि

मन्क़ूल है : क़ियामत के दिन दुनिया ज़लील हो कर अ़र्ज़ करेगी कि ऐ अल्लाह ! मुझे अपने सब से कम नेक वली को इन्आ़म में दे दे तो अल्लाह पाक फ़रमाएगा : ज़लील ! दूर हो, जब मैं ने दुनिया में उन्हें तुझ से मुतनफ़्फ़िर और दूर रखा तो आख़िरत में कैसे तुझे उन के गले में डाल दूं ! (قوت القلوب،1/407)

अफ़सोस ! आज हर एक को येही दुनिया मीठी लगती है और वोह इसी दुनिया की तगो दौ में पूरी ज़िन्दगी गुज़ार देता, इसी के फ़न सीखता, इसी को पाने के लिए अमेरीका, चाइना, जर्मनी, जापान और दुनिया के मुख़्तलिफ़ मुल्कों में जाता है, फिर एक दिन अख़बार में आता है कि जापान से फ़ुलां की लाश आ रही

है, फ़ुलां का अमेरीका में इन्तिक़ाल हो गया है, उस की लाश आ रही है, दीन और क़ुरआन बहुत कम लोग सीखते हैं। लिहाज़ा जिस ने ह़राम कमाया, अपनी आख़िरत बरबाद की, जिस से अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नाराज़ हो गए और जिस का ईमान तबाह हो गया उस के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआन कह रहा है :

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝

(پ30، التکاثر:5تا7)

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : यक़ीनन अगर तुम यक़ीनी इ़ल्म के साथ जानते (तो माल से मह़ब्बत न रखते)। बेशक तुम ज़रूर जहन्नम को देखोगे फिर बेशक तुम ज़रूर उसे यक़ीन की आंख से देखोगे।

ऐ माल की मह़ब्बत के मतवालो ! ऐ रिश्वत का लेन देन करने वालो ! सूदी कारोबार करने वालो ! सूद के इदारों में सूद कमाने वालो ! सूद के काम काज पर मददगार बनने वालो ! दूध में पानी मिलाने वालो ! झूट बोल कर सौदा बेचने वालो ! इन आयाते मुबारका में अपना अन्जाम देख लो ! और याद रखो !

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَىِٕذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝

(پ30، التکاثر:8)

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से नेमतों के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा।

लिहाज़ा जिस को ज़ियादा माल मिल भी गया तो वोह भी फंस गया कि बाद में उस को ह़िसाब किताब देना पड़ जाएगा। मालो दौलत ख़त़रनाक हैं, येह जितने ज़ियादा होंगे उतना ही दुनिया व आख़िरत में परेशान करेंगे और उस के बारे में पूछा जाएगा कि उस को सह़ीह़ त़रीक़े पर इस्तिमाल क्यूं न किया जैसा कि

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या बिन मुआ़ज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का क़ौल है : मालदार इन्सान को मरते वक़्त दो आफ़तें दरपेश होती हैं जो दूसरों (यानी ग़रीबों) को नहीं

होतीं : पहली येह कि उस से उस का सारा माल छीन लिया जाता है और दूसरी येह कि उसे तमाम माल का ह़िसाब देना पड़ता है। (مکاشفۃ القلوب، ص144)

याद रखिए माल छिन जाना भी बहुत बड़ी आफ़त है, जब माल छिनता है तो बड़ा सदमा होता है जैसा कि कुछ अ़र्से पहले अख़बार में आया कि एक शख़्स की लॉटरी लगी तो वोह बड़ा ख़ुश हुवा और इन्आ़मी रक़म ले कर चल पड़ा, रास्ते में एक जेब कतरे की नज़र उस पर पड़ी और उस ने उस की जेब काट ली, जब उस को पता चला कि मेरी दौलत ज़ाएअ़ हो गई है तो उसे बड़ा अफ़सोस हुवा, उस ने चलती ट्रेन के आगे छलांग लगा कर ख़ुदकुशी कर ली और ह़राम मौत मर गया, देखा ! आप ने माल छिनता है तो बड़ा सदमा होता है।

येह भी याद रहे कि माल छिन जाने पर बस नहीं होगी बल्कि आख़िरत में ह़िसाब भी देना पड़े, पूछा जाएगा कि माल कहां से ह़ासिल किया और कहां ख़र्च किया ? कहां अगर माल ह़लाल था तो उस को ह़लाल त़रीक़े पर क्यूं ख़र्च नहीं किया ? या कहां से ह़ासिल किया ? या कहां कहां ख़र्च किया ? येह पूछा जाएगा और अगर ह़राम था तो कमाया ही क्यूं ? अब सज़ा भुगतो ! इस लिए माल सरासर आफ़त है।

याद रखिए ! दुनिया में जिस के पास जितनी नेमतें ज़ियादा होती हैं क़ियामत के दिन उस के लिए उतने ही परेशानी के अस्बाब खड़े होते हैं।

## अपनी औलाद के लिए कुछ जमा कर दीजिए !

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन कअ़बुल क़ुर्ज़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ को कहीं से बहुत सारा माल व मताअ़ हाथ लग गया तो लोगों ने उन से कहा कि अपनी औलाद के लिए संभाल कर रखिएगा ! आप ने फ़रमाया : मैं इसे अपने लिए अल्लाह पाक के हां जमा करूंगा और अपने रब को अपनी औलाद के लिए छोड़ जाऊंगा।

(مکاشفۃ القلوب، ص143)

देखिए ! जैसे आज कल औ़रतें बहुत सोना जमा कर लेती हैं कि बेटी की शादी में या परेशानी में काम आएगा फिर भी ग़रीब बनती हैं, ज़कात नहीं देतीं और येह बहाना बनाती हैं हम कमाती थोड़ी हैं, याद रखिए ! अगर कोई औ़रत साहि़बे निसाब हो गई तो शराइत़ पाए जाने की सूरत में उसे ज़कात देनी पड़ेगी, उस में कमाना शर्त़ नहीं जैसे अगर कोई तोह़फ़े में बहुत सारा माल दे दे और उस पर साल गुज़र जाने के साथ साथ दीगर शराइत़ भी पाई जाएं तो उस पर भी ज़कात देनी पड़ेगी यहां तक कि जो लोग नियाज़ की रक़म का ह़िस्सा निकाल कर अलग रखते हैं और किसी को सोंपा नहीं होता तो वोह उन की मिल्क में है वोह भी ज़कात में शामिल होगा। अफ़सोस ! अक्सर लोग मेरे पास आ कर आंसुओं से रोना शुरूअ़ कर देते हैं और कहते हैं कि बेटियां जवान हो गई हैं, अगर ज़कात निकालेंगे तो येह हो जाएगा वोह हो जाएगा।

इस से पता चला येह सब फ़िक्रें हमारे हाथों की हैं। यक़ीन मानिए ! अगर लोग दावते इस्लामी का ह़क़ीक़ी इस्लामी पैग़ाम क़बूल कर लें तो सारे मसाइल ह़ल हो जाएं, मालो दौलत से मह़ब्बत छोड़ दें, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों को थाम लें, इस्लाम के ज़र्रीं (यानी उ़म्दा, क़ीमती) उसूलों को अपना लें, नेक नमाज़ी बन जाएं और आख़िरत की फ़िक्र करने लगें तो सारे मसाइल ह़ल हो जाएंगे और हमारा मुआ़शरा इतना दुरुस्त हो जाएगा कि दुनिया की कोई त़ाक़त उस की त़रफ़ नज़र तक नहीं उठाएगी, फिर अल्लाह पाक की ग़ैबी मदद भी उसी त़रह़ हमारे साथ शामिल होगी जिस त़रह़ मैदाने बद्र में आई कि एक त़रफ़ तीन सौ तेरह थे जब कि उन के सामने अस्लह़ा से लैस एक हज़ार का लश्कर था, क़ुरआने पाक से साबित है कि वहां फ़िरिश्तों की फ़ौजें उतरीं, किताबों में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم के बयानात हैं, वोह फ़रमाते हैं कि मैदाने बद्र में हम मारने के लिए तल्वार

उठाते, इस से पहले कि वोह उस की गर्दन तक पहुंचती गर्दन ख़ुद ही कट कर गिर जाती जिस से पता चलता कि फ़िरिश्तों की तल्वार लगती थी।

(شرح الزرقانی علی المواہب، 2/292ملخصًا)

बद क़िस्मती से आज हर घर में फ़िल्में ड्रामे देखे जाते हैं, हमारे ह़क़ीक़ी इस्लाम में क़ुरआनो ह़दीस और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِم की किताबों में फ़िल्में ड्रामे, गाने बाजे, उ़र्यानी, अ़य्याशी और फ़ह़्हाशी की कोई गुन्जाइश नहीं, ह़क़ीक़ी मदनी इस्लाम जो मदनी आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ले कर आए और जो फ़िल्मों ड्रामों, हर त़रह़ की बुराई और आलूदगी से पाक है उस को अपनाना चाहिए अल्लाह करे कि हमें सुथरा और पाकीज़ा इस्लाम मुयस्सर आ जाए। ख़ुदा की क़सम ! आज अगर हमें ह़क़ीक़ी इस्लाम मुयस्सर आ गया तो हमें फिर से वोह क़ुव्वते ईमानी ह़ासिल हो सकती है जो दुश्मन को ज़ेर कर सकती है, तारीख़ गवाह है हमारे अस्लाफ़ ने अपनी क़ुव्वते ईमानी से बड़े बड़े दुश्मनों को ज़ेर किया है जैसा कि

## क़त्ल के इरादे से आने वाला मुसलमान हो गया

ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुल ह़क़ वद्दीन ह़सन संजरी अजमेरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की बारगाह में एक शख़्स छुरी ले कर आया, उस की येह ख़्वाहिश थी कि वोह किसी त़रह़ आप का काम तमाम कर दे, आप ने उस की त़रफ़ मोमिनाना निगाह डाली (ह़दीस शरीफ़ में है : मोमिन की फ़िरासत से डरो कि वोह अल्लाह के नूर से देखता है। (معجم اوسط، 2/271، حدیث:3254)) और उस का इरादा जान लिया, फिर आप ने फ़रमाया : मैं ह़ाज़िर हूं, जल्दी छुरी निकालो और अपना काम पूरा कर लो ! येह सुन कर वोह थर थर कांपने लगा कि उन को कैसे पता चला और उस पर इतना रोब पड़ा कि वोह आप के क़दमों में गिर गया, वोह छुरी भी आप के क़दमों में डाल दी और कहने लगा : मैं वाक़ेई क़त्ल के इरादे से ह़ाज़िर हुवा था,

अब मेरी सज़ा येही है कि आप इस छुरी से मुझे ज़ब्ह कर दें तो आप ने फ़रमाया : हमारा इस्लाम हमें येह तालीम नहीं देता, हम ईंट का जवाब पत्थर से नहीं फूल से दिया करते हैं, वोह इतना मुतअस्सिर हुवा कि मुसलमान हो कर आप का मुरीद हो गया। (मिरआतुल असरार (मुतर्जम), स. 598 माख़ूज़न)

## अब तुझे कौन बचाएगा ?

इसी त़रह़ प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक बार दरख़्त के नीचे आराम फ़रमा रहे थे कि एक शख़्स ग़लत़ इरादे से तल्वार ले कर आ गया, आप की आंख खुल गई। वोह कहने लगा : ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अब तुम्हें मुझ से कौन बचाएगा ? तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह ! उस ने तीन मरतबा पूछा, आप ने तीनों मरतबा अल्लाह पाक का नाम लिया, जैसे ही इस्मे ज़ात की ज़र्ब पड़ी तो उस काफ़िर पर लर्ज़ा त़ारी हो गया और उस के हाथ से तल्वार छूट गई, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तल्वार संभाल ली और फ़रमाया : अब तुझे कौन बचाएगा ? वोह एक दम घबरा गया, फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को मुआफ़ कर दिया, आप का येह अख़्लाक़ देख कर वोह मुसलमान हो गया। (بخاری، 3/59، حدیث:4135 ملخصاً)

देखिए ! आज भी अगर हम सह़ीह़ मानों में अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर भरोसा कर लेंगे और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामने करम से वाबस्ता हो जाएंगे तो आज भी हमारा ईमान मुकम्मल हो जाएगा, जो आफ़तों के बादल मन्डला रहे हैं वोह सारे छट जाएंगे, ज़ुल्मत के बादल काई की त़रह़ फट जाएंगे, मदीनए पाक के अन्वार व तजल्लियात हमारे दिलों पर फ़ाइज़ हो जाएंगे और हमारे दिल उस से मुस्तफ़ीज़ हो जाएंगे اِنْ شَآءَ اللّٰه ! अक़्वामे आलम इस से जगमगा उठेंगे, सारे डाकू तौबा कर लेंगे, दुनिया में हर त़रफ़ सुकून, इत़मीनान

और राहतों का दौर दौरा होगा, मदीने का सकीना उतरेगा और اِنْ شَآءَ الله रहमतें ही रहमतें नाज़िल होंगी, कम अज़ कम येह अ़हद कर लीजिए कि अब से कभी नमाज़ नहीं छोड़ेंगे और दाढ़ी भी नहीं मुन्डाएंगे।

याद रखिए ! ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं जैसा कि एक अख़बार में आया :

एक गांव में दो भाइयों की एक दिन के फ़ासिले से शादी थी, बड़े भाई की शादी हो गई, अगले दिन छोटे भाई की शादी थी, चुनान्चे अगले दिन बड़ा भाई और दीगर रिश्तेदार छोटे भाई की बरात ले कर शादी में शिर्कत के लिए बस में रवाना हुए, बस अपनी रफ़्तार से जा रही थी कि अचानक एक जगह रोड पर अ़क़्ल में न आने वाला अ़जीब ह़ादिसा हुवा कि बस का दरवाज़ा खुला और वोह बड़ा भाई जिस की कल ही शादी हुई थी, बेचारा चलती बस से फिसल कर रोड पर आ गिरा और बस का टायर इस पर चढ़ गया, वोह शदीद ज़ख़्मी हो गया, लोग दौड़े दौड़े आए और उसे शदीद ज़ख़्मी ह़ालात में उठा कर अस्पताल पहुंचाया गया। बरात आगे बढ़ कर लड़की के घर पहुंच गई और निकाह़ की तय्यारियां शुरूअ़ हो गईं, इधर वोह बेचारा अस्पताल के फ़र्श पर पड़ा था उधर उस के छोटे भाई के निकाह़ की तय्यारियां हो चुकी थीं, इतने में अस्पताल से ख़बर आई कि "दूल्हे के बड़े भाई ने अस्पताल में दम तोड़ दिया है।" सारी शादी की मह़फ़िल में सफ़े मातम बिछ गई और शादी रुक गई। जब उस बड़े भाई की नई नवेली दुल्हन ने येह ख़बर सुनी तो उस के औसान ख़ता हो गए, उस का दिमाग़ी तवाज़ुन ख़राब हो गया और वोह पागल हो गई, देखते ही देखते ख़ुशियों से सजा हुवा माह़ौल ग़मों में डूब गया।

ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बहुत से कफ़न धुल कर तय्यार रखे होते हैं मगर कफ़न पहनने वाले बाज़ारों में घूम फिर रहे होते हैं, काफ़ी लोग ऐसे

होते हैं कि उन की क़ब्रें खोदी जा चुकी होती हैं मगर उन में दफ़न होने वाले ख़ुशियों में मस्त होते हैं। (غنیۃ الطالبین، 1/348)

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** आज आप जिस प्रोजेक्ट की संगे बुनियाद रख रहे हैं और जिस का बड़ा बेहतरीन मॉडल भी बनाया हुवा है, क्या पता वोह देखना ही नसीब न हो, उस से पहले ही क़ब्र खुद कर तय्यार हो चुकी हो। कितने नौजवान बेचारे शादी की ख़्वाहिश में दम तोड़ जाते हैं इसी त़रह़ आए दिन अख़बार में आता है शादी में नाकामी की वजह से कितने ही लड़के और लड़कियां ख़ुदकुशी कर डालते हैं, लिहाज़ा नेकी में देर न कीजिए, जो करना है आज करो, आज का काम कल पर मत डालो, कल दूसरा काम होगा, तो आज जो करना है कर लो और अभी कर लो, कहा जाता है कि नेकी में देर नहीं करनी चाहिए, जैसे ही नेकी की निय्यत करें फ़ौरन कर डालें मसलन नमाज़ का वक़्त हो जाए तो फ़ौरन पढ़ लीजिए कि नमाज़ से बढ़ कर कोई अहम काम नहीं, नमाज़ में हरगिज़ कोताही न करें कि येह अल्लाह पाक का हुक्म है, बस येह ज़ेहन बना लें कि पांचों वक़्त की नमाज़ पढ़नी है और येह अ़हद भी कर लें कि अब से اِنْ شَآءَ اللہ सुस्ती नहीं करेंगे, फ़ज्र के वक़्त सोए नहीं रहेंगे और कोई नमाज़ नहीं छोड़ेंगे, इसी त़रह़ चेहरे पर प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत दाढ़ी शरीफ़ सजाएंगे कि

दामने मुस़्त़फ़ा से जो लिपटा यगाना हो गया जिस के हुज़ूर हो गए उस का ज़माना हो गया

याद रखिए ! दाढ़ी मुन्डाना भी ह़राम और कतरवा कर एक मुठ्ठी से छोटी कर डालना भी ह़राम है। (फ़तावा रज़विय्या, 22/571 ता 572 मुलख़्ख़सन) लिहाज़ा जितनी भी आंधियां और तूफ़ान आ जाएं दाढ़ी को थाम कर रखें اِنْ شَآءَ اللہ सारे ग़म के साए ढल जाएंगे, घरेलू परेशानियां दूर हो जाएंगी, अगर घर वाले मना करें तो आप बह़स न करें क्यूंकि अगर आप बह़स करेंगे और दलाइल देंगे तो हो सकता

है कि ज़ियादा गड़बड़ हो जाए लिहाज़ा चुप हो जाएं, किसी से डिस्कस न करें और कोई लड़ाई न करें बल्कि मेरे बयान सुना दिया करें, इस से اِنْ شَآءَ الله सारे मसाइल ह़ल हो जाएंगे। कई ऐसे ख़ानदान जो पहले दाढ़ी और इमामा शरीफ़ वग़ैरा से इलर्जिक होते थे अब اَلْحَمْدُلِلّٰه ! वोह बयानात सुन कर सह़ीह़ हो चुके हैं, लिहाज़ा अगर आप नहीं समझा सकते तो कोई बात नहीं बस मह़ब्बत से उन को बयान सुनने पर राज़ी कर लें, बयान सुन लेंगे तो اِنْ شَآءَ الله ठीक हो जाएंगे।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

## फ़ेहरिस्त


| उ़न्वान | सफ़ह़ा |
|---|---|
| दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत | 01 |
| औलियाए किराम से दुश्मनी रखना | 06 |
| नोट को चूमना कैसा ? | 08 |
| अपनी औलाद के लिए कुछ जमा कर दीजिए ! | 10 |
| क़त्ल के इरादे से आने वाला मुसलमान हो गया | 12 |
| अब तुझे कौन बचाएगा ? | 13 |

# अगले हफ़्ते का रिसाला

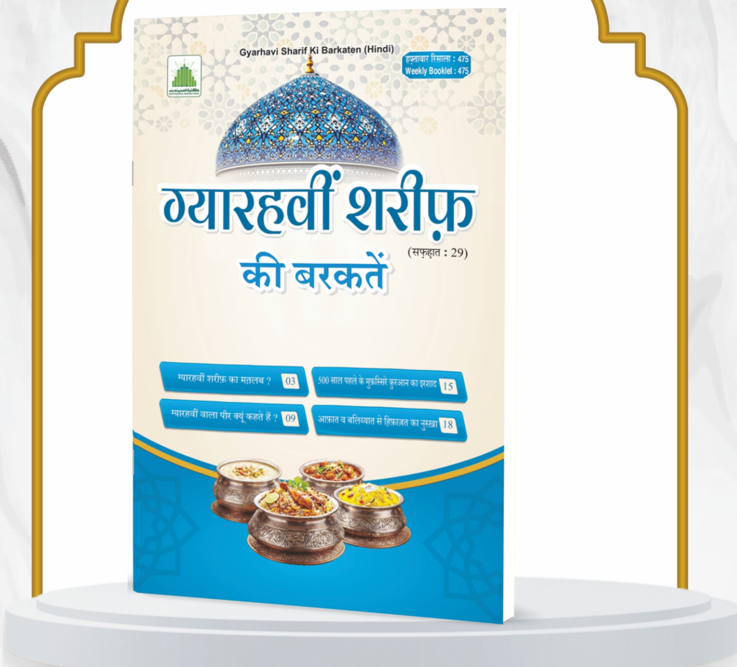



DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

**Delhi :** 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

**Mumbai :** 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

**Ahmedabad :** Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

**Nagpur :** Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025